International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(5): 85-88

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(5): 85-88
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-07-2016
Accepted: 21-08-2016

डॉ0 रीना
संविदा प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
आर.एस.एम. कॉलेज, धामपुर
(बिजनौर) उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ0 रीना
संविदा प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
आर.एस.एम. कॉलेज, धामपुर
(बिजनौर) उत्तर प्रदेश, भारत।

महामहोपाध्याय पं0 मथुरा प्रसाद दीक्षित विरचित "वीर प्रताप" नाटक के सौंदर्यबोधक तत्त्वचों की विवेचना

डॉ0 रीना

प्रस्तावना

इस शोध पत्र में पं0 मथुरा प्रसाद दीक्षित द्वारा विरचित नाटक 'वीर प्रताप' के उन तत्वों का विश्लेषण किया जायेगा, जिनमें सौन्दर्य की विभिन्नता का बोध होता है। कहते ही नहीं अपितु यह सिद्ध भी है कि कोई भी कवि या रचनाकार जिस प्रकार काल बोध और युग बोध से प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकता, उसी प्रकार कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप में रचनाकार की लेखनी रचना के सौंदर्यात्मक पहलुओं को भी अवश्य ही अभिव्यक्त करती है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से नाटक 'वीर प्रताप' के सौंदर्य बोधात्मक तत्वों पर विवेचनात्मक प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

अनेकानेक नाट्यशास्त्रीयों द्वारा नाटकों में सामान्य तौर पर तीन प्रकार के सौन्दर्य बोधक तत्वों यथा– नाट्यलक्षण, लास्याङ्ग एवं सन्ध्यन्तर का वर्णन किया गया है। जहाँ तक नाट्य लक्षणों का प्रश्न है तो–

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में 36 नाट्य लक्षणों का वर्णन किया है।[1] आचार्य अभिनव गुप्त का कथन है– जैसे किसी महापुरुष के शरीर में अंकित पद्म आदि शुभ चिह्नों से उसके सौभाग्य का संकेत मिलता है, इसी प्रकार लक्षणों से काव्य का सहज सौन्दर्य द्योतित होता है। अलंकार तो रत्न निर्मित आभरणा दिवत् हैं, जिनके बिना भी नायक या नायिका अपने सौन्दर्य से सुशोभित होते हैं।[2] गुण तो प्रवृत्ति से द्योतित धैर्य आदि के सदृश काव्यगत शब्द और अर्थ की रचना के आश्रय से रहता है।[3] अतएव नाट्य रचना के शौभाधायक इन लक्षणों के रसानुकूल प्रयोग का भरतमुनि ने विधान किया है।[4] सागरनन्दी का लक्षणों के विषय में कथन है कि अनेक विशेषताओं के आपादक लक्षणों से नाटक उसी प्रकार शोभित होता है, जैसे कल्याण सूचक चिह्नों और उत्तम गुणों के धारण करने से राजा चक्रवर्ती पद को प्राप्त करे।

विश्वनाथ ने इन नाट्य लक्षणों का गुण, अलंकार, भाव एवं संध्यगों में अन्तर्भाव स्वीकार करके भी 36 नाट्य लक्षणों का उल्लेख करते हुए इनके विशेष कथन का उद्देश्य नाटकादि में इनको अवश्य प्रयोज्य बताया है।

लास्याङ्ग के संदर्भ में दशरूपककार ने नृत्य एवं नृत्त का स्वरूप बताते हुए नृत्य को भावाश्रित[5] एवं नृत्त को ताल लयाश्रित[6] बताया है तथा नाटक आदि के उपकारक इनके दो–दो भेद किये हैं– सुकुमार (लास्य) और उद्वत (ताण्डव)[7] नाट्य में आवान्तर पदार्थों के अभिनय के रूप में नृत्य की ओर शोभा बढ़ाने के लिए नृत्त का उपयोग किया जाता है।[8] शास्त्रीय पद्धति के अनुसार पदार्थ का अभिनय होने के कारण नृत्य को मार्ग तथा लोकसरणि के अनुसार अंग विक्षेप होने के कारण नृत्त को देसी भी कहा गया है।[9] आचार्य भरत के अनुसार लास्याङ्ग नाट्योपयोगी हैं[10] एवं अभिनव गुप्त ने रंजना–वैचित्र्य के लिए नाट्याभिनय हेतु लास्याङ्गों को निबन्धनीय बताया है।[11]

सुकुमार काव्य के आश्रय पर सुकुमार गाने की योजना होती है और उसी के अन्तर्गत नृत्त का प्रयोग किया जाता है। सुकुमार गीत एवं नृत्त (लास्य) श्रृंगार रस से सम्बद्ध एवं काम–भावना से प्रेरित स्त्री–पुरुष के संलाप से युक्त होता है।[12] भरत के अनुसार लास्याङ्ग के प्रयोग की निम्नलिखित अवस्थाएँ हैं–

प्रत्येक अङ्ग वस्तु की परिसमाप्ति होने पर अर्थात् किसी गीत के पदभाग का रचनाक्रम और वर्ण के समाप्त होने पर अभ्युदय की स्थिति के प्राप्त होने पर[13] श्रृंगार रस के अन्तर्गत पति–पत्नी के प्रेम व्यापारों से सम्बन्धित प्रदर्शन में, ऋतु तथा काल के अनुरूप प्रिय की निकटता होने पर गीतक के अर्थ से पूर्णतः सम्बद्ध अत्यनत हर्षोल्लास गुण के मूल स्रोत–रूप नृत्त का प्रयोग किया जाता है।[14] खण्डिता, विप्रलब्धा अथवा कलहान्तरिता, प्रोषितपतिका नायिका की भूमिका जिस भाग में हो, वहाँ नृत्त का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।[15] दूत के वचनों के आधार पर ऋतु तथा काल आदि के दर्शन की सम्भावना

होती है, किन्तु यहाँ पर यदि नायिका किसी अंग के अभिनय में प्रसन्नता को प्राप्त करती है तो नृत्त का प्रयोग होता है।[16] उत्सुकता एवं चिन्ता का अभिनय करने पर नहीं।[17] नाट्य में स्त्री पुरुष के सम्बन्धों पर आधारित श्रृंगार भावना से युक्त गान के साथ देवी पार्वती के द्वारा रचे गये ललित अंगहारों से युक्त नृत्त का प्रयोग करने का विधान है।[18]

आचार्य भरत ने– नाट्यशास्त्र में सन्ध्यन्तरों का कथन करते हुए इनको सन्धियों का विशिष्ट भाग बताया है।[19] सन्ध्यन्तरों की पृथकशः परिभाषाएँ नाट्यशास्त्र में नहीं दी गयी हैं। रसार्णव सुधाकरकार ने सन्ध्यन्तरों के विषय में लिखा है कि मुखादि सन्धियों के अंगों में जहाँ पर शिथिलता प्राप्त हो, वहाँ इन 21 सन्ध्यन्तरों का प्रयोग किया जाये।[20] रसार्णवसुधाकर, नाटक लक्षणरत्नकोश[21] एवं नाटक चन्द्रिका[22] में इन सन्ध्यन्तरों की परिभाषाएँ सोदाहरण उल्लितिखत हैं[23] रसार्णव सुधाकर के मत में सन्ध्यन्तरों के प्रयोग से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है।[24] दशरूपक एवं साहित्यदर्पण में सन्ध्यन्तरों का वर्णन नहीं किया गया है।

नाट्य लक्षणरत्न कोष एवं रसार्णवसुधाकर में दी गयी परिभाषाओं के आधार पर दीक्षित जी की नाट्यकृति 'वीर प्रताप' में प्रयुक्त सौंदर्यबोधक तत्वों का विवेचन इस प्रकार है–

1. भूषण

पृथमांक में वेश्या के प्रति प्रताप के कथन 'लुंवन्ती..... असिधारा'[25] में श्लेष अलंकार एवं प्रसाद आदि गुण से समन्वित होने के कारण भूषण नामक नाट्य लक्षण है। इसी प्रकार चतुर्थांक में गुप्तचर की उक्ति "आसन्कल्प.... शतध्न्यः पराः"[26] अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार एवं ओज आदि गुणों से युक्त होने के कारण भूषण[27] नामक नाट्य लक्षण है।

2. अक्षर संघात

चतुर्थांक में गुप्तचर का कथन "बाणाः.....सहस्रं ततः"[28] श्लिष्ट पदों के द्वारा सर्प और बाण के विषय में द्वयर्थक है। अतः अक्षरसंघात नामक नाट्य लक्षण का उदाहरण है। इसी प्रकार पंचम अंक में पृथ्वी सिंह की उक्ति "सन्धापूर्व..... सविस्मयं त्वाम्"[29] श्लेषयुक्त पदों से द्वयर्थक होने से अक्षरसंघात[30] का उदाहरण है।

3. शोभा

तृतीयांक में योगिनी के गीत "भज.....सरोवरनालम्"[31] में प्रताप विषयक अज्ञात अर्थ को शिवसम्बन्धी ज्ञात अर्थ से तुलना करके श्लेष के माध्यम से कहा गया है। इसी प्रकार चतुर्थांक में अकबर के कथन "यावत्प्रतापः.....नयैनम्"[32] में प्रताप विषयक असिद्ध अर्थ की सूर्य विषयक सिद्ध अर्थ से तुलना की गयी है। इसी प्रकार षष्ट अंक में प्रताप के देशान्तर गमन करने पर योगिनी के गीत "धावत–2 भजतप्रतापं.....पुनरायातम्"[33] में सूर्य विषयक सिद्ध अर्थ के माध्यम से श्लिष्ट पदों के द्वारा प्रताप सम्बन्धी असिद्ध अर्थ का कथन किया गया है। अतः ये 'शोभा'[34] नामक नाट्य लक्षण के उदाहरण हैं।

4. उदाहरण

चतुर्थांक में प्रताप व सालुम्ब के वार्तालाप में सालुम्ब की सलीम विषयक उक्ति 'बगुला भी हंस की गति चलना चाहता है जो यह सलीम आपसे युद्ध करना चाहता है"[35] में तुल्यार्थ के द्वारा इष्ट अर्थ का समर्थन किया है। इसी प्रकार चतुर्थांक में ही गुप्तचर के द्वारा युद्ध विषयक वर्णन में "हस्ते खड्गं.....क्षणेन" श्लोक में "जिस प्रकार किसान बिना प्रयास के ही अपने खेत को काट डालता है उसी प्रकार प्रताप ने शत्रु को काट डाला"[36] इत्यादि कथन के द्वारा इष्ट अर्थ का समर्थन किया गया है। इसी प्रकार सप्तम अंक में अकबर के सेनापति की प्रताप विषयक उक्ति "परस्त्रियं यो..... तमस्ततिम्"[37] में कहा गया है कि "परस्त्री को जो मन से भी नहीं देखता है, वही (प्रताप) भला पर नारी को "दासी" कैसे बनायेगा। अपनी कान्ति से सारे संसार को प्रकाशमान करने वाला, सूर्य कभी भी गाढ़ान्धकार को पैदा नहीं करता है।" इस प्रकार प्रताप के गुण विषयक अर्थ का कथन करने के लिए तुल्यार्थ सूचक वाक्य कहा गया है। अतः "उदाहरण"[38] नामक नाट्य लक्षण हैं।

संशय

प्रथमांक में प्रताप के कथन "क्या मैं पहले अपने पिता का और्द्धदहिक कृत्य करूँ? या उसके मरने के पहले ही देश का परित्याग करूँ? इस तरह मेरा मन दोलायमान हो रहा है।[39] में संशय होने से संशय नामक नाट्य लक्षण है। षष्ट अंक गुहराज के प्रति प्रताप के कथन–"किं दैन्यं परिहाय..... अन्यक्षितो" त्वमपि कथय, किमतः परं कर्त्तव्यं"[40] एवं चतुर्थांक में अकबर की उक्ति "मानो नैन.....प्रेषयिष्ये पुनः"[41] में अनेक विचारों के बीच संशय होने से "संशय"[42] नामक नाट्य लक्षण है।

6. दृष्टान्त

तृतीयांक में प्रताप के "अस्तु एतत्, इदं तु पूर्वमेव निश्चितमासीत् यन्मानो अपमानं मन्यमानो रूष्टोभविष्यति उदूखले शिरोदाने मूसलात्का भीतिः। युद्धं तु निश्चितं एवं[43] यहाँ युद्ध के अवश्यंभावी रूप इष्ट अर्थ का साधक होने से निदर्शन रूप होने से दृष्टांत रूप नाट्य लक्षण है। इसी प्रकार चतुर्थ अंक में अकबर की उक्ति "ज्ञानविहीन मन वाले मैंने अपने पुत्र को कैसे नियुक्त कर दिया, जैसे बिल्ली (प्रताप) को मारने के लिए या पकड़ने के लिए कोई मूसे की तरह नियुक्त कर दें।"[44] पुत्र प्रेम रूप इष्ट अर्थ की साधक एवं अप्रत्यक्ष अर्थ प्रताप की वीरता का साधक होने एवं निदर्शन रूप होने से "दृष्टान्त"[45] नामक नाट्य लक्षण है।

7. प्राप्ति

द्वितीय अंक में शक्ति सिंह के मेवाड़ को छोड़कर अकबर से मिलने पर अकबर शक्ति सिंह के क्रोध को देखकर उसके प्रताप से विद्वेष[46] का अनुमान कर लेता है। चतुर्थ अंक में मान सिंह अकबर से कहता है कि शक्ति सिंह भाई के प्रेम में अवश्य आयेगा।[47] इस प्रकार अनुमान है। पंचम अंक में युद्ध प्रसंग में बिना घायल हुए शक्ति सिंह को देखकर मानसिंह अनुमान करता है कि शक्ति सिंह ने ही अपने भाई प्रताप की रक्षा[48] की है। इस प्रकार अनुमान होने से "प्राप्ति"[49] नामक नाट्य लक्षण है।

8. निदर्शन

द्वितीय अंक में शक्ति सिंह के अपने पिता के विषय में कही गयी उक्ति "पूज्यानां चरितानि.....संतुष्यते।"[50] में अर्जुन द्वारा सन्यासी वेष में कन्या का हरण किये जाने एवं युधिष्ठिर द्वारा जुआ खेले जाने के प्रसिद्ध प्रसंगों का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार द्वितीय अंक में ही अकबर की शक्ति सिंह के प्रति उक्ति "लंकामिवाहँ मेवाडं जित्वा गर्वसमुद्वतम्, अभ्षिेक्ष्यामि तत्र त्वां यथा रामो विभीषणं"[51] में प्रसिद्ध घटना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अंक में प्रताप के भामाशाह विषयक कथन "उप्ता या..... साध्यते।"[52] में वामन, राजा शिवि एवं कर्ण से सम्बन्धित दान की घटना के उल्लेख होने से "निदर्शन"[53] नामक नाट्य लक्षण है।

9. सिद्धि

द्वितीय अंक में शक्ति सिंह को चेतक विषयक कथन "कथं..... सन्ततं"[54] में इष्ट अर्थ को पूर्ण करने के लिए वायु पुत्र हनुमान जी के नाम का कथन किया गया है। तृतीय अंक में प्रताप की रामगुरु सम्बन्धी उक्ति "नये कवि..... स्थिति पालन धमः"[55] में शुक्राचार्य, बृहस्पति, शंकर, विष्णु आदि प्रसिद्ध नामों का कथन किया गया है। इसी प्रकार चतुर्थांक में पृथ्वी सिंह की प्रताप विषयक उक्ति "कः कोपो..... समर्थो भवेत्"[56] में प्रताप की वीरता, प्रतिज्ञा पालन में दृढ़ता रूप इष्ट कार्य को द्योतित करने के लिए भीम एवं भीष्म पितामह के प्रसिद्ध नामों का कथन होने से सिद्धि[57] नामक नाट्य लक्षण है।

10. दिष्ट

द्वितीयांक में शक्ति सिंह के द्वारा ग्रीष्मकाल के विषय में "तापं संजनयन्.....समुज्जृभ्यते"[58] देश, काल एवं स्वरूप के अनुसार ही वर्णन किया गया है। इसी प्रकार चतुर्थ अंक में सायंकाल का वर्णन "आरूण्यं..... समुज्जृभ्मते।"[59] देश, काल एवं स्वरूपव के अनुसार किये जाने के कारण दिष्ट[60] नामक नाट्य लक्षण है।

11. उपदिष्ट

द्वितीयांक में भद्रमुख की– "पूर्व जन्मकृत कर्म के प्रभाव से मनुष्य राजा, धनिक व निर्धन होता है उसी प्रकार पूर्व जन्मकृत कर्म के अनुसार ही ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र होता है, इस प्रकार पूर्व कर्मों से प्राप्त जाति को कोई भी बदल नहीं सकता है।"[61] शास्त्रोक्त उक्ति है। चतुर्थांक में प्रताप का "न जानाति युद्धभूमिर्वीराणामेवागमनस्थानं"[62] कथन शास्त्र सम्मत होने से "उपदिष्ट"[63] नामक नाट्य लक्षण है।

12. विचार

प्रथम अंक में प्रताप के कथन "किं स्वातन्त्र्यकृते..... म्लेच्छदृष्टाधरा"[64] में अनेक प्रकार के उपायों का कथन करके अन्त में अप्राप्य वस्तु, म्लेच्छों से अपनी भूमि की रक्षा का कथन किया गया है। चतुर्थ अंक में मान सिंह की उक्ति "जित्वैनं.....नियोक्ष्ये द्रुतम्"[65] में अनेक उपायों के कथन द्वारा प्रताप के द्वारा सन्धि रूप अप्राप्य वस्तु की सिद्धि बताई गयी है। पंचम अंक में अकबर के कथन "निविड़ विपिन मध्ये.....पातयेथाः"[66] अनेक उपायों के कथन द्वारा प्रताप की अधीनता रूप असिद्ध अर्थ का कथन करने से "विचार"[67] रूप नाट्य लक्षण है।

13. अनुक्तसिद्धि

चतुर्थ अंक अकबर के सामने गुप्तचर के कथन "अथ..... गजोऽपि तत्रसे" में "मेरे पर कौन कूद पड़ा यह जानकर हाथी भी डर गया।" ऐसा आधा ही कहने पर अकबर की उक्ति "ओह, सलीम भी मारा गया, आह, मेरे जीवनधार आह! मेरी आज्ञा पालन में प्राण छोड़ने वाले तथा प्रजा के प्यारे! (इस प्रकार कहते हुए मूर्च्छित हो जाता है)[68] में सलीम की मृत्यु के शेषार्थ का ज्ञान हो जाता है। अतः "अनुक्त सिद्धि"[69] रूप नाट्य लक्षण है।

14. प्रियोक्ति

सप्तम अंक में प्रताप के प्रति योगिनी का गीत "हर हर जयदेव..... जितयवनेश"[70] में प्रताप के प्रति सम्मान को प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग होने के कारण "प्रियोक्ति"[71] सा नाट्य लक्षण है।

15. गेयपद : तृतीय अंक में वीणा वाद्य के साथ योगिनी निम्नलिखित गायन करती है– "त्यज रे मान कपटमदजालम्..... सरोवर नालम्।[72]

इसी प्रकार षष्ठ और सप्तम अंकों में क्रमशः इस प्रकार गायन करती है–

धावत धावत भजत प्रतापभ्.....पुनरायताम्।[73]
हर हर जय जय देव..... जय जय जितयवनेश।।[74]

उपर्युक्त स्थलों पर वीणा वाद्य के साथ आसनस्था योगिनी के अभिनयरहित गायन होने से "गेयपद" लास्याङ्ग है।

दीक्षित जी की कृतियों में अन्य लास्याङ्गों का प्रयोग प्राप्त नहीं होता है।

1. **भेदः** द्वितीय अंक में आखेट से उत्पन्न हुए विवाद को दूर करने के लिए रामगुरु अपना बलिदान दे देते हैं। शक्ति सिंह मेवाड़ भूमि को छोड़कर चला जाता है।[75]
2. **प्रदान :** षष्ठ अंक में भामागुप्त प्रताप को पुनः सैन्य शक्ति एकत्र करने के लिए अपने कोषागार का समस्त धन देता है।[76]
3. **दण्ड :** रामगुरु के बलिदान से क्षुब्ध हुआ प्रताप शक्ति सिंह को मेवाड़ भूमि को छोड़ने का दण्ड देता है।[77] चतुर्थ अंक में भिल्लनी के पिता को प्राण दण्ड दिया जाता है।[78]
4. **वध :** चतुर्थ अंक में युद्ध के वर्णन प्रसंग में अनेक सैनिकों के मारे जाने का कथन किये जाने से वध सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।[79] षष्ठ अंक में भी प्रताप के आक्रमण से अनेक सैनिकों के मारे जाने का कथन है।[80]
5. **प्रत्युत्पन्नमति :** पंचम अंक–प्रताप के सन्धियाचना का पत्र भेजने पर अकबर महोत्सव की तैयारी करते हैं पत्र पढ़ते ही पृथ्वी सिंह यह जाली है, आपके क्षणिक संतोश के लिए उसके किसी विरोधी ने यह रचा है"[81] कहकर सन्धि के संकट से प्रताप को बचा लेते हैं। इस प्रकार यह "प्रत्युत्पन्नमति" सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।
6. **साहस :** सागरनन्दी की परिभाषा के अनुसार अपने शरीर की परवाह न करके रामगुरु प्रताप व शक्ति सिंह के विवाद की शान्ति के लिए अपना बलिदान दे देते हैं।[82] अतः साहस नामक सन्ध्यन्तर का उदाहरण है। रसार्णव सुधाकरकार की परिभाषा के अनुसार "साहस" सन्ध्यन्तर का कोई उदाहरण वीर प्रताप में नहीं मिलता है।
7. **धी :** पंचम अंक में चण्डिका अकबर के मन की बात ताड़कर कि यह मेरा शील भंग करना चाहता है, छुरी से उस पर आक्रमण करती है।[83] अतः "धी" नामक सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।
8. **क्रोध :** द्वितीय अंक में क्रोधयुक्त शक्तिसिंह अकबर के दरबार में आता है।[84] तृतीय अंक में सालुम्ब क्रोधपूर्ण वचन मानसिंह के प्रति कहलाता है।[85] इस प्रकार क्रोध सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।
9. **ओज :** चतुर्थ अंक में सलीम अपनी शारीरिक शक्ति का प्रकाशन करता है।[86] इसके पश्चात् ही प्रताप भी अपनी शक्ति को प्रकट करता है।[87] इस प्रकार "ओज" सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।
10. **दूत :** द्वितीय अंक में भद्रमुख नामक गुप्तचर आगरा नगर का समस्त वृत्तान्त सुनाता है।[88] द्वितीय अंक में ही दूत आकर वन की जानकारी देता है।[89] इसी अंक में अकबर का ऐन्द्रजालिक वेषधारी मुहम्मद नाम का दूत प्रताप के समाचार अकबर को देता है।[90] चतुर्थ अंक में आगरा से आया हुआ गुप्तचर प्रताप को अकबर के समाचार देता है।[91] चतुर्थ अंक में ही अकबर का गुप्तचर युद्ध के समाचार देता है।[92] अन्य स्थलों पर भी दूत एवं गुप्तचर संदेश एवं समाचारों को लाने, ले जाने का कार्य करते हैं। अतः यह दूत नामक सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।
11. **मद :** प्रथमांक में विट, चेट, जगमल्ल आदि बैठकर सुरापान करते हैं।[93] अतः मद सन्ध्यन्तर का उदाहरण है।

निष्कर्ष

इस प्रकार 'वीर प्रताप' नाटक में ऐसे बहुत से क्षण आये हैं जिनमें सौंदर्य का बोध होता है। सौंदर्य बोधात्मक तथ्यों के आधार पर नाटककार ने नाटक की वस्तुस्थिति को प्रस्तुत किया है, जो युगों–युगों तक अविस्मरणीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ना0शा0 17/1–5, ना0ल0र0को0, पृ0 146।
2. लक्षणं महापुरुषस्य पद्मादिरेखादिवत काव्यशरीरस्य सौन्दर्यादायिनो अलंकारस्तु रत्नाभरणादिवदेव, येनविनापि स्वसौन्दर्येणव पुरुषः प्रतिभासते। अभि0भा0 (ना0शा0) भाग–2, पृ0 1343।
3. गुणस्तु प्रवृत्तिद्योतितो धैर्यादिवत् काव्यस्य शब्दार्थ रचनामाश्रयाति। अभि0भा0 (ना0शा0) भाग–2, पृ0 134।

4. एतानिकाव्यस्य च लक्षणमिषट्त्रिाशंदुदेशनिदर्शकानि। प्रबन्धशोभाकरणानि तज्ज्ञैः सम्यक्प्रयोज्यानि यथारसानि।। (ना0शा0) 16/42।
5. अन्यद्व भावाश्रयं नृत्यम्। द0रू0 1/12।
6. नृत्त ताललयाश्रयं। द0रू0 1/13।
7. मधुरोदतभेदेन तद्द्रयं द्विविधं पुनः। लास्यतोण्डव रूपेण नादकाद्युपकारकं।। द0रू0 1/10।
8. प्रसंगोक्तस्योपयोगं दर्शयति–त यनाटकाधुपकारकमिति, नृत्यस्य क्वचि दवान्तर पदार्थाभिनयेन नृतस्य च शोभाहेतुत्वेन नाटकादानुपयोग इति। द0रू0 1/15 की धनि–वृत्ति।
9. आद्यं पदार्धाभिनयो मार्गो देशी तथा परम। द0रू0 1/14।
10. अन्यान्यपि लास्यविधावइ गानि त नाटकीपयोगीनि। ना0शा0 20/133।
11. .....रंजनावैचि याय कविप्रयोक्तृभिर्नाट्ये निबन्धनीयः।। अभि0या0 (ना0शा0) भाग 3, पृ0 67।
12. स्त्रीपुंसयोस्तु संलापो यस्तु कामसमुद्भवः। तज्ज्ञेयं सुकुमारं हि श्रृंगार रस सम्भव।। ना0शा0 4/308।
13. अङ्गवस्तु निवृत्तो तु तथा वर्णनिवृत्तिष। तथा चाभ्यदयस्थाने नृत्त तज्ज्ञः प्रयोजयेत।। 4/310 ना0शा0।
14. यत्र सन्दृश्यते किन्चिद्दम्पत्योर्मदनाश्रयम्। नृत्तं तत्र प्रयोक्तव्यं प्रहर्षार्थगुणोद्भवम्।। 4/311।
15. खण्डिता विप्रलब्धा वा कलहान्तरितापि वा। यस्मिन्नङ्गे तु युवतीर्न नृत्तं तत्र योजयेत।। 4/313, 314।
16. दृत्याश्रयं यदा तु स्याद् ऋतुकालादिदर्शनम्। औत्सुक्यचिन्ता सम्बद्ध न नृत्तं तत्र योजयेत।। 4/315।
17. यस्मिन्नङ्गे प्रसादं तु गृहणीयान्नायिकास क्रमात्। ततः प्रभृति नृत्तं तु शेषिष्वङ्गेषु योजयेत्।। 4/316।
18. त्तु श्रृंगारसंबद्धं गानं स्त्रीपुरुषाश्रयम्। देवीकृततरङ्गहारैललितैस्तत् प्रयोजयेत्।। 4/317।
19. सन्ध्यन्तराणि सन्धीनां विशेषास्त्वेक विशंतिः। ना0शा0 21/49।
20. मुखादि सन्धिस्वङ्गानामशैथिल्यं प्रतीयते। सन्ध्यन्तराणि योग्यानि तत्र तत्रैक विशंति।। र0सु0 3/79।
21. ना0ल0र0को0 पृ0 92–100।
22. ना0च, पृ0 80–96।
23. र0सु0 79–91।
24. आचार्यान्तर सङ्गत्या चमत्कारो विधीयते। लक्ष्यलक्षणमेतेषामुदाहृतमपि स्फुटम्।। र0सु0 3/80।
25. वीर प्रताप 1/पृ0 18।
26. वही, 4/पृ0 105।
27. ना0शा0 17/6।
28. वीर प्रताप 4/पृ0 104।
29. वही 5/पृ0 142।
30. ययाल्पैरक्षरैः श्लिष्टैर्विचित्रमुपवर्ण्यते। तमप्यक्षरसंघातं विद्याल्लक्षणसज्ञितम्।। ना0शा0 17/7।
31. वीर प्रताप 3/पृ0 61–62।
32. वही, 4/पृ0 86
33. वीर प्रताप 6/पृ0 165–166
34. सिद्धेस्यैः समं कृत्वा ह्यसिद्धोऽर्थः प्रयज्ते। यत्र श्लिष्टा विचित्रार्था साशोभेत्यभिर्धायते।। ना0शा0 17/8
35. वीर प्रताप 4/पृ0 97
36. वही 4/पृ0 106
37. वही, 7/पृ0 188
38. ना0शा0 17/9
39. वीर प्रताप, 1/पृ0 5
40. वही 6/पृ0 163
41. वही 4/पृ0 201
42. ना0शा0 17/11
43. वीर प्रताप 3/पृ0 70
44. वही 4/पृ0 101
45. ना0शा0 17/12
46. वीर प्रताप 2/पृ0 49
47. वही, 4/पृ0 90
48. वीर प्रताप, 5/पृ0 124
49. ना0शा0 17/13
50. वीर प्रताप 2/पृ0 23
51. वही, 2/पृ0 52
52. वही, 6/पृ0 172
53. ना0शा0 17/15
54. वही, 3/पृ0 52
55. वीर प्रताप, 2/पृ0 34
56. वीर प्रताप, 4/पृ0 94
57. ना0शा0, 17/17
58. वीर प्रताप, 2/पृ0 26
59. वही, 4/पृ0 120–121
60. यथार्दशं यथाकालं यथारूपन्च वर्ण्यते। यत् प्रत्यक्षं परोक्षं वादिष्टं तद्वर्णतो पि वा।। ना0शा0 17/23।
61. वीर प्रताप, 2/पृ0 28
62. वही, 4/पृ0 97
63. ना0शा0 17/24
64. वीर प्रताप, 1/पृ0 5
65. वीर प्रताप, 4/पृ0 88
66. वही, 5/पृ0 124–125
67. पूर्वाशयसमानाथैरिप्रत्यक्षार्थसाधनैः। अनेकोपाधि संयुक्तो विचारः परिकीर्तितः।। ना0शा0 17/25।
68. वीर प्रताप, 4/पृ0 112
69. प्रस्तावनैव शेषोऽर्थः कृत्स्नो यत्र प्रतीयते, वचनेन विनानुक्तसिद्धिः सापरिकीर्तिता।। ना0शा0 17/40।
70. वीर प्रताप, 7/पृ0 193
71. ना0शा0 17/41
72. वीर प्रताप 3/पृ0 60–62
73. वीर प्रताप 6/पु0 135–136
74. वही, 7/पृ0 191–193
75. वीर प्रताप, 2/पृ0 42
76. वही, 6/पृ0 167–173
77. वही, 2/पृ0 42
78. वही, 4/पृ0 78–86
79. वीर प्रताप, 4/पृ0 103–117
80. वही, 6/पृ0 178
81. वही, 5/पृ0 141
82. वही, 2/पृ. 42
83. वही, 5/पृ0 159
84. वही, 2/पृ0 49
85. वही, 3/पृ0 67
86. वही, 4/पृ0 93
87. वही, 4/पृ0 99
88. वीर प्रताप, 2/पृ0 27–31
89. वही, 2/पृ0 37
90. वही, 2/पृ0 43–44
91. वही, 4/पृ0 96, 99
92. वही, 4/पृ0 102–117
93. वही, 1/पृ0 7–9
94. वीर प्रताप, पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित, धूपचण्डी, वाराणसी, प्र0सं0 1965।
95. नाट्य शास्त्र, भरत भाग–1, 2, 3, 4 ओरिएन्टल इंस्टीट्यूट बड़ौदा, 1954।
96. रसार्णव सुधाकर, शिङ्गभूपाल, संस्कृत परिषद, सागर वि0वि0, सागर, 1969।
97. दश रूपक, धन्न्जय : डा0 श्री निवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ, पं0सं0 1983